

जैन दर्शन का विश्व दर्शन

३४३ घन राजू प्रमाण त्रिलोक रेखाकृति

लोक्यन्ते यस्मिन् षट् ब्रह्माणि इति लोकः ।

अकृत्रिम विनालय की संख्या
 ८५६९७४८९ तीनलोक के (प्रत्येक में १०८ प्रतिमा)
 ७७२०००० अणुलोक में भवन वासी के (व्यंत्तर के असंख्य)
 ४५८ मज्जलोक में (ज्योतिषी व्यंत्तर के असंख्य)
 ८४९७०२३ उर्ध्वलोक में (इतनेही देवो के विमान है)

'सौमंत' नरक का प्रथम बिल
 'मनुष्यक्षेत्र' अर्थाई द्वीप
 'श्रुत' सौधमका प्रथम विमान
 'सिद्धशिला' लोक के अग्र भाग में यह चारो ४५ लाख योजन विस्तारके है ।

अष्टम पृथ्वी इंषलाभाभार
 चौलाई १ रातू, चौलाई ७ रातू चौलाई ८ योजन

'अव्यवस्थान' नरक का अंतिम बिल
 'जंबूद्वीप' प्रथम द्वीप
 'सर्वभंडसिद्धि' देव का अंतिम विमान
 यह तीनों ९ लाख योजन विस्तारके है ।

८४ लाख योनि जन्म स्थान
 त्रिचक्रगति ६२ लाख
 देवगति ४ लाख
 नारकि गति ४ लाख
 मनुष्य गति १४ लाख

कुनो से संख्या १९१,५ लाख करोड़ है
 सिद्धिके १३४,५ लाख करोड़
 नरक के २५ लाख करोड़
 मनुष्य के १४ लाख करोड़
 देवके २६ लाख करोड़

ज्योतिषलोक विना भूमिसे
 ७९० यो. ऊपर जाने पर यहां से
 ११० यो. ऊंचा, और स्वर्गपुरगण
 समुद्र तक है ।

विना भूमि को ऊपर की ओर से
 मध्य लोक की ऊंचाई ९६००० योजन
 विना भूमि से नीचे लक्ष्मणा १८०००० योजन मोटी
 १) विना भूमि १००० योजन
 २) उर भाग १५००० योजन
 ३) शंक भाग ८४००० योजन
 ४) अष्टम ८०००० योजन = उर वर - लक्ष्मणा

७वीं पृथ्वी के मध्यभाग में तथा शेष
 पांच पृथ्वी और अम्बुदल के नीचे व
 ऊपर १-१ हजार योजन
 ओडकर सीमें बिल होते है ।

पटलके मध्य में
 कृत्रक है ।
 पंक्ति रूप से
 श्रेणी बदा है ।
 बिलके हुए
 प्रकीर्णक है ।

७वीं नरक में
 प्रकीर्णक बिल नहीं हैं ।
 अष्टम पृथ्वी अंतिम भ्रमा
 ८००० योजन मोटी

अलोक्यन्ते यस्मिन् षट् ब्रह्माणि इति लोकः ।

सिद्ध शिला गोलाकार
 ४५ लाख योजन विस्तार
 मध्य में ८ योजन मोटी
 अत्यंत अंतुन मात्र है ।

विश्वी का धारण मात्र जान संभव है ।

लोक के मध्य भाग में
 व्रत वाली १ रातू चौलाई X १ रातू चौलाई X
 ४०२०.२८ योजन कम १३ रातू ऊंचाई हैं ।

व्रत नीचे वर वाली में ही रहते हैं ।
 स्थान एकैन्त्रिय जीवों का
 सारे लोक में समुदाय है ।

अप्रमानी में उपकी ओर से देखने
 पर इत्थक, वेणीचक्र, प्रकीर्णक
 विमान का दृश्य है ।

मनुष्य
 त्रिचक्र

अलोक्यन्ते यस्मिन् षट् ब्रह्माणि इति लोकः ।

अलोक्यन्ते यस्मिन् षट् ब्रह्माणि इति लोकः ।

अलोक्यन्ते यस्मिन् षट् ब्रह्माणि इति लोकः ।

अलोक्यन्ते यस्मिन् षट् ब्रह्माणि इति लोकः ।

अलोक्यन्ते यस्मिन् षट् ब्रह्माणि इति लोकः ।

अलोक्यन्ते यस्मिन् षट् ब्रह्माणि इति लोकः ।

अलोक्यन्ते यस्मिन् षट् ब्रह्माणि इति लोकः ।

अलोक्यन्ते यस्मिन् षट् ब्रह्माणि इति लोकः ।

अलोक्यन्ते यस्मिन् षट् ब्रह्माणि इति लोकः ।

१५७५ धनुष तनु वात वायु
 २००० धनुष धन वात वायु
 ४००० धनुष पतनोत्थि वात वायु

दोनों पार्श्व भागों में वात वायुकी मोटाई १२ योजन
 पतनोत्थि वात वायु ५ योजन
 धनवात वायु ४ योजन
 तनुवात वायु ३ योजन

सारा लोक तीन विवर
 वातवायु से घेरा हुआ है।
 १. पतनोत्थि वातवायु
 लोक के अंदर से प्रथम वात,
 जो लोक का आधाररूप है।
 २. धनवातवायु
 मध्यका द्वितीय वातवायु है।
 ३. तनुवातवायु
 लोक में तृतीय अंतिम अर्थात्
 अलोक से प्रथम वात है।

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १६ योजन
 पतनोत्थि वात ७ योजन
 धनवात वायु ५ योजन
 तनुवात वायु ४ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १२ योजन
 पतनोत्थि वात वायु ५ योजन
 धनवात वायु ४ योजन
 तनुवात वायु ३ योजन

अनंत अलोकाकाश

लोक का प्रमाण
 लोक १५ रातू ऊंचा है।
 उत्तर - दक्षिण उत्तरेण १ रातू चौलाई
 पूर्वी - पश्चिम तले में १ रातू चौलाई
 तलसे १ रातू ऊंचाईपर घटकर मज्जलोक के १ रातू चौलाई
 बल्लिसे ३ १/२ रातू ऊंचाईपर घटकर ५ रातू चौलाई
 बल्लिसे ३ १/२ रातू ऊंचाईपर घटकर १ रातू चौलाई

दोनों पार्श्व भागों में वात वायुकी मोटाई १२ योजन
 पतनोत्थि वात वायु ५ योजन
 धनवात वायु ४ योजन
 तनुवात वायु ३ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात वायुकी मोटाई १२ योजन
 पतनोत्थि वात वायु ५ योजन
 धनवात वायु ४ योजन
 तनुवात वायु ३ योजन

वातवायु के दबाव से लोक का संकुचन है।
 अठो पृथ्वीके नीचे वात ६०००० यो. मोटा है।
 लोकप्रमाण में वातवायु ७५७५ धनुष मोटा है।
 पतनोत्थिवात जो नरक पृथ्वीवाँ नव दिशा से
 और इंषलाभाभार पृथ्वी दशों दिशा से लगी हुई है।

पतनोत्थिवात: पानी मिश्रित हवा - गैरपूरक
 धनवात = धनुष - मुंगवर्ण
 तनुवात = पतली हवा - अर्धकवर्ण

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १६ यो.
 पतनोत्थि वात ७ योजन
 धनवात वात ५ योजन
 तनुवात वात ४ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १२ योजन
 पतनोत्थि वात वायु ५ योजन
 धनवात वायु ४ योजन
 तनुवात वायु ३ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १६ यो.
 पतनोत्थि वात ७ योजन
 धनवात वात ५ योजन
 तनुवात वात ४ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १२ योजन
 पतनोत्थि वात वायु ५ योजन
 धनवात वायु ४ योजन
 तनुवात वायु ३ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १६ यो.
 पतनोत्थि वात ७ योजन
 धनवात वात ५ योजन
 तनुवात वात ४ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १२ योजन
 पतनोत्थि वात वायु ५ योजन
 धनवात वायु ४ योजन
 तनुवात वायु ३ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १६ यो.
 पतनोत्थि वात ७ योजन
 धनवात वात ५ योजन
 तनुवात वात ४ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १२ योजन
 पतनोत्थि वात वायु ५ योजन
 धनवात वायु ४ योजन
 तनुवात वायु ३ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १६ यो.
 पतनोत्थि वात ७ योजन
 धनवात वात ५ योजन
 तनुवात वात ४ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १२ योजन
 पतनोत्थि वात वायु ५ योजन
 धनवात वायु ४ योजन
 तनुवात वायु ३ योजन

दोनों पार्श्व भागों में वात
 वायुकी मोटाई १६ यो.
 पतनोत्थि वात ७ योजन
 धनवात वात ५ योजन
 तनुवात वात ४ योजन

संक्षेपणः शिलोव पतली, त्रिलोकधार, त्रिलोक भास्वर, तलवार चूड़ ।
 ३६°, ४८°, ६०° के बदे विच उरसम्ब है ।

सहयोगी: श्री महेन्द्रभाई कल्याणजी शाह, हैदराबाद

कृती अग्रगत करे
 Contact: 09394527686
 09395166344